वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 362
ISBN-978-93-82071-40-2

श्री रत्नत्रय पूजा विधान

–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव के निर्वाणकल्याणक माघ कृ. चतुर्दशी- 9 फरवरी 2013 के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	माघ कृ. चतुर्दशी, 9 फरवरी 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

प्रतिदिन देव-शास्त्र-गुरु की पूजा में पढ़ते हैं–

देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।

इसका अर्थ यह है कि देव-शास्त्र और गुरु ये तीन रत्न अन्य तीन रत्नों को प्रदान करने वाले हैं अर्थात् सच्चे देव–तीर्थंकर भगवान के दर्शन से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है, शास्त्र की पूजा करने से सम्यग्ज्ञान मिलता है और गुरु की भक्ति-पूजा करने से सम्यक्चारित्र प्राप्त हो जाता है। इन सम्यग्दर्शन आदि तीन रत्नों को ''रत्नत्रय'' भी कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष में तीन बार–चैत्र, भाद्रपद और माघ मास में शुक्लपक्ष की त्रयोदशी तिथि से पूर्णिमा तक तीन दिन ''रत्नत्रय व्रत'' किया जाता है इस व्रत को तेरह वर्ष तक करने की परम्परा है। तेरह वर्ष तक व्रत करने के पश्चात् उसके उद्यापन में करने हेतु प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस ''रत्नत्रय विधान'' की रचना करके समसामयिक कार्य किया है।

इस विधान में सर्वप्रथम समुच्चय रत्नत्रय पूजन पुनः सम्यग्दर्शन पूजा, सम्यग्ज्ञान पूजा और सम्यक्चारित्र पूजा, इस प्रकार कुल 4 पूजाएँ हैं। सम्यग्दर्शन पूजा में 12 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, सम्यग्ज्ञान पूजा में 48 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य तथा सम्यक्चारित्र पूजा में तेंतीस अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है, इस प्रकार सब मिलाकर 12+48+33=93 अर्घ्य एवं 3 पूर्णार्घ्य हैं।

इससे पूर्व भी पूज्य चंदनामती माताजी ने नवग्रहशांति विधान, मनोकामनासिद्धि विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, समयसार विधान, दशलक्षण विधान, सोलहकारण विधान आदि अनेक विधानों की रचना की है। सैकड़ों भजनों की रचयित्री पूज्य माताजी वर्तमान में महान ग्रंथराज षट्खण्डागम के सूत्रों की सिद्धान्तचिंतामणि संस्कृत टीका का हिन्दी में अनुवाद कर रही हैं। अन्य अनेक लेखन कार्यों को करते हुए भी इस विधान को पूज्य माताजी ने मात्र 11 दिन में लिखकर पूर्ण कर दिया। भादों के महीने में रत्नत्रय व्रत के समापन दिवस इस विधान की पूर्णता का होना एक सुखद संयोग है।

इस विधान को करके आप सभी अपने जीवन में एक न एक दिन रत्नत्रय धारण करने की भावना अवश्य करें, क्योंकि आचार्यों ने कहा है कि रत्नत्रय धारण किए बिना मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। यह रत्नत्रय विधान आप सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल शुभकामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

अनादिकाल से इस संसार में चार गतियाँ मानी गई हैं–देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति और नरकगति। आमतौर पर लोग यह समझते हैं कि इन चारों गतियों में देवगति सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि स्वर्ग में देवों को बहुत सुख है परन्तु ऐसा नहीं है, देवगति श्रेष्ठ तो है परन्तु सर्वश्रेष्ठ मनुष्यगति ही है क्योंकि इस मनुष्यगति को पाकर प्राणी रत्नत्रय जैसी अमूल्यनिधि के द्वारा सिद्ध भगवान के समान अनुपम-शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकता है।

रत्नत्रय का अर्थ है–तीन रत्न, और वे तीन रत्न हैं-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। इन तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है जैसा कि तत्त्वार्थसूत्र की प्रथम अध्याय का पहला सूत्र है-''सम्यदर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।''

इस ''रत्नत्रय विधान'' में इन्हीं तीन रत्नों की महिमा बताई गई है। सर्वप्रथम रत्नत्रय की समुच्चय पूजा के अष्टक की पंक्ति में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने लिखा है–

''सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।''

वास्तव में मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र कभी भी रत्नत्रय नहीं कहे जा सकते हैं और न ही इनकी एकता मोक्ष का मार्ग हो सकती है अतः सम्यक् अर्थात् सच्चे दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही शाश्वत सुख के प्रदाता हैं।

इसके पश्चात् द्वितीय ''सम्यग्दर्शन पूजा'' की स्थापना में पूज्य माताजी ने बहुत ही सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है कि जिस प्रकार जड़ के बिना वृक्ष नहीं टिक सकता, नींव के बिना कोई सुन्दर इमारत नहीं बना सकता, उसी प्रकार सम्यग्दर्शन के बिना मात्र सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र न तो रत्नत्रय कहला सकते हैं और न ही मोक्ष का मार्ग बन सकते हैं अतः तीनों की एकता होना आवश्यक है।

पं. दौलतराम जी ने भी छहढाला में सम्यग्दर्शन की महिमा बताते हुए लिखा है कि–

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान-चरित्रा।
सम्यक्ता न लहें सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा।।

सम्यग्दर्शन को मोक्षरूपी महल की प्रथम सीढ़ी बताते हुए छहढालाकार ने

बताया कि बिना सम्यग्दर्शन के ज्ञान और चारित्र सम्यक्त्वपने को प्राप्त नहीं हो सकते अतः हे भव्यात्मन्! सम्यग्दर्शन को अवश्य धारण करो।

इस सम्यग्दर्शन पूजा में पूज्य माताजी ने सम्यग्दर्शन के 12 अर्घ्य चढ़ाने की बात कही है, जिसमें प्रथम 4 अर्घ्य–उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व एवं निश्चयसम्यक्त्व के हैं पुनः सम्यग्दर्शन के निःशंकित आदि आठ गुणों के आठ अर्घ्य, इस प्रकार 4+8=12 अर्घ्य के पश्चात् 1 पूर्णार्घ्य पुनः जयमाला में सम्यग्दर्शन के इन आठ अंगों के पृथक्-पृथक् लक्षणों को स्पष्टतः बता दिया है।

आगे सम्यग्ज्ञान पूजन में 48 अर्घ्यों के माध्यम से ज्ञान की आराधना करने की प्रेरणा प्रदान की है। इनमें क्रमशः सर्वप्रथम स्वर-व्यंजन आदि अष्ट शुद्धियुत सम्यग्ज्ञान के आठ भेदों के 8 अर्घ्य पुनः मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के 2 अर्घ्य, इसके बाद श्रुतज्ञान के आचारांग आदि ग्यारह अंगों के 11 अर्घ्य, बारहवें दृष्टिवाद अंग का 1 अर्घ्य और दृष्टिवाद अंग के पाँच भेदों में से प्रथम भेद परिकर्म के चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि 5 भेदों के 5 अर्घ्य पुनः दृष्टिवाद के द्वितीय-तृतीय भेद सूत्र और प्रथमानुयोग का 1-1 अर्घ्य, इसके पश्चात् पूर्वगत नामक चतुर्थ भेद के 14 भेदों के 14 अर्घ्य, पुनः चूलिका के 5 भेदों के 5 अर्घ्य, इस प्रकार 8+2+11+1+5+1+1+14+5=48 अर्घ्य चढ़ाना है।

ज्ञान की महिमा का वर्णन करते हुए पं. दौलतराम जी कहते हैं–

ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।

वास्तव में ज्ञानरूपी अमृत का पान करने वाला व्यक्ति हमेशा आत्मसंतुष्टि की अनुभूति करता है अतः सतत ज्ञानार्जन हेतु तत्पर रहना चाहिए।

इन अर्घ्यों के पश्चात् अंतिम सम्यक्चारित्र पूजन में 33 अर्घ्य चढ़ाने का विधान है जिसके अन्तर्गत पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्तियों में मन-वचन-काय से लगने वाले दोषों की विरतिरूप निरतिचारचारित्र पालन करने की भावना भाई गई है।

इस प्रकार 93 अर्घ्यों से सहित इस विधान को करके आप सब भी अपने जीवन में एक न एक दिन रत्नत्रय को अवश्य धारण करें, यही मंगलकामना है।

विधान की प्रेरणास्रोत, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना
माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमामहावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थइत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी,कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत – 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि – तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

श्री रत्नत्रय पूजा विधान

मंगलाचरण

-शार्दूलविक्रीडित छंद-

सिद्धेर्धाममहारिमोहहननं, कीर्तेः परं मन्दिरम्।
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुखं, संशीति विध्वंसनम्।।
सर्वप्राणिहितं प्रभेन्दुभवनं, सिद्धिप्रमालक्षणम्।
सन्तश्चेतसि चिन्तयन्तु सुधियः, श्रीवर्धमानं जिनम्।।1।।

शान्तिः कुंथ्वरनाथशक्रमहिताः, सर्वैः गुणैरन्विताः।
ते सर्वे तीर्थेशचक्रिमदनैः, पदवीत्रिभिः संयुताः।।
तीर्थंकरत्रयजन्ममृत्युरहिताः, सिद्धालये संस्थिताः।
ते सर्वे कुर्वन्तु शान्तिमनिशं, तेभ्यो जिनेभ्यो नमः।।2।।

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनम्।
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्र्यालयं।
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

।।इति पुष्पांजलिः।।

रत्नत्रय वंदना

-शंभु छंद-

जिनने रत्नत्रय धारण कर, परमेष्ठी का पद प्राप्त किया।
अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय, साधु का पद स्वीकार किया।।
इन पाँचों परमेष्ठी के, श्रीचरणों में मेरा वंदन है।
रत्नत्रय की प्राप्ती हेतू, रत्नत्रय को भी वंदन है।।1।।

रत्नत्रय के धारक श्री चारितचक्रवर्ती गुरु को वंदन।
बीसवीं सदी के प्रथम सूर्य, आचार्य शांतिसागर को नमन।।
श्री वीरसागराचार्य प्रथम, जो पट्टाचार्य उन्हें वंदन।
उनकी शिष्या हैं ज्ञानमती जी, गणिनीप्रमुख उन्हें वन्दन।।2।।

रत्नत्रय की इन प्रतिमाओं के, वरदहस्त को मैं चाहूँ।
सम्यग्दर्शन अरु ज्ञानचरण की, स्वयं पूर्णता पा जाऊँ।।
रत्नत्रय व्रत का यह विधान, रचने की मन भावना जगी।
फिर सकल-विकल रत्नत्रय आराधक की आराधना सजी।।3।।

यूँ तो यथाशक्ति रत्नत्रय, पालन सब कर सकते हैं।
लेकिन रत्नत्रय का व्रत बिरले, मानव ही कर सकते हैं।।
चैत्र भाद्रपद माघ मास में, रत्नत्रयव्रत आता है।
शुक्ल द्वादशी से एकम् तक, इसे मनाया जाता है।।4।।

तीन दिवस उपवास तथा, दो दिन एकाशन जो करते।
वे उत्कृष्ट[1] रूप में रत्नत्रय व्रत का पालन करते।।
पाँच दिवस एकाशन करना, मध्यम[2] व्रत कहलाता है।
तीन दिवस एकाशन करना, व्रत जघन्य[3] बन जाता है।।5।।

---

1. तीनों मास की शुक्ला द्वादशी को एकाशन एवं तेरस-चौदश-पूर्णिमा तीन दिन का उपवास करके आगे की एकम् को एकाशन करना उत्कृष्ट रत्नत्रय व्रत कहलाता है।

2. तीनों मास में शुक्ला द्वादशी से अगले मास की एकम् को मिलाकर पाँच दिन एकाशन करना अथवा मध्य की चतुर्दशी को 1 उपवास करके चार दिन एकाशन करना मध्यम रत्नत्रयव्रत होता है।

3. तीनों मास की शुक्ला तेरस से पूर्णिमा तक तीन दिन एकाशन करना अथवा चतुर्दशी को उपवास और दो दिन एकाशन करना जघन्य रत्नत्रय व्रत कहलाता है।

रत्नत्रय व्रत के उद्यापन में, इस विधान को करते हैं।
रत्नत्रय की वृद्धी हेतू, स्वाध्याय ध्यान को करते हैं।।
रत्नत्रय की उत्कृष्ट साधना, मुनियों में साकार कही।
रत्नत्रय की मध्यम जघन्य, साधना श्रावकों में भी कही।।6।।

रत्नत्रय का मण्डल विधान, हम सबको रत्नत्रय देवे।
मिथ्यात्व सहित संसार भ्रमण का, अन्त हमारा कर देवे।।
यह अभिलाषा ''चन्दनामती'', लेकर विधान प्रारंभ करो।
रत्नत्रय की जय-जयकारों से, शुभ कर्मों का बंध करो।।7।।

-दोहा-

रत्नत्रय के मार्ग पर, चलते रहो सदैव।
पा जाओगे एक दिन, शाश्वत सुख हे जीव!।।8।।

मण्डल पर पुष्पांजली, करो करावो भव्य।
पूजन को प्रारंभ कर, पाओ निजसुख नव्य।।9।।

।।अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

रत्नत्रय पूजा (समुच्चय पूजा)

–स्थापना (अडिल्ल छंद) –

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की साधना।
कहलाती है रत्नत्रय आराधना।।
इस रत्नत्रय को ही शिवपथ जानना।
करूँ उसी रत्नत्रय की स्थापना।।1।।

दोहा – **आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।**
रत्नत्रय पूजन करूँ, जिनमंदिर में आन।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक –

तर्ज-एरी छोरी बांगड़ वाली.....

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
कंचन झारी में जल ले, प्रभुपद त्रयधारा करना है।
जन्म जरा मृत्यू का नाशक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।1।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
काश्मीरी केशर घिस करके, जिनपद चर्चन करना है।
पंचपरावृत भवदुखनाशक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।2।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
धवल अखण्डित तंदुल लेकर, प्रभु ढिग पुंज चढ़ाना है।
अक्षयपद शिवसौख्य प्रदायक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।3।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
वकुल केवड़ा आदि पुष्प ले, जिनवर चरण चढ़ाना है।
कामबाण विध्वंस में हेतू, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।4।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
मिष्ट सरस पकवान्न थाल ले, जिनवर चरण चढ़ाना है।
क्षुधारोग विध्वंसनकारक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।5।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
घृत दीपक की थाली लेकर, प्रभु की आरति करना है।
मोहमहातम का विध्वंसक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।6।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
शुद्ध धूप ले अग्निघटों में, प्रभु के पास जलाना है।
सभी अष्टकर्मों का नाशक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।7।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
सेव आम अंगूर आदि फल, प्रभु के निकट चढ़ाना है।
दुखनाशक मुक्तीफलदायक, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।8।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय आराधन, शाश्वत सौख्य प्रदाता है।।टेक.।।
अर्घ्य थाल ''चन्दनामती'', जिनवर के चरण चढ़ाना है।
पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतू, रत्नत्रय कहलाता है।।सम्यक्...।।9।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक निर्मल नीर ले, कर लूँ शांतीधार।
आत्मशक्ति जाग्रत करूँ, लूँ रत्नत्रय धार।।10।।
शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, लिया पुष्प भर थाल।
आतम गुण विकसित करूँ, लूँ रत्नत्रय धार।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- (1) ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः।
अथवा
(2) ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय नमः।

जयमाला

हाथों में लेकर पूजन का थाल, छाई हैं मन में खुशियाँ अपार,
हम सब आए हैं पूजन के लिए-2।।टेक.।।
आठ अंगों से युत, सम्यग्दर्शन शुद्ध होता।
जिसको पाकर मानव, आतम के करम मल धोता।।
मुक्तिमहल की सीढ़ी है यह,
हम सब आए हैं पूजन के लिए।।1।।
अष्टविध ज्ञान सम्यक्, जिसे पाकर के ज्ञानी है बनना।
ज्ञान के दर्पण में, दोष को देखकर उनसे डरना।।
ज्ञान मिले-विज्ञान मिले,
हम सब आए हैं पूजन के लिए।।2।।
है त्रयोदश विध का, चारित्र जिसे पालते मुनि।
पाप कुछ त्याग करके, बनें श्रावक भि तो अणुव्रती हैं।।
पाप तजें-हम पुण्य करें,
हम सब आए हैं पूजन के लिए।।3।।
रत्नत्रय का यह उपवन, गुण पुष्पों से होता है सुरभित।
रत्नत्रय का यह अर्चन, भव्यों को ही करता है सुरभित।।
वन्दन है, अभिनंदन है,
हम सब आए हैं पूजन के लिए।।4।।
रत्नत्रय पूजन की, जयमाला का पूर्णार्घ्य लाए।
''चन्दनामति'' प्रभु के, चरणों में चढ़ाने आए।।
ज्ञान मिले, चारित्र मिले,
हम सब आए हैं पूजन के लिए।।5।।
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद- **जो भव्य रत्नत्रय की पूजा सदा करें।**
त्रयरत्नप्राप्ति का प्रयत्न ही सदा करें।।
वे रत्नत्रय धारण के फल को प्राप्त करेंगे।
तब ''चन्दनामती'' वे आत्मतत्त्व लहेंगे।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

सम्यग्दर्शन पूजा

–स्थापना –

जैसे जड़ के बिना वृक्ष नहिं टिक सकता है पृथिवी पर।
नहीं नींव के बिना बना, सकता कोई मंजिल सुन्दर।।
वैसे ही सम्यग्दर्शन बिन, रत्नत्रय नहिं बन सकता।
यदि मिल जावे सम्यग्दर्शन, तब ही मुक्तीपथ बनता।।1।।

–दोहा –

सम्यग्दर्शन रत्न का, स्थापन आह्वान।
पूजन से पहले करूँ, सन्निधिकरण महान।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (दोहा) –

गंगा नदि का नीर ले, कर लूँ प्रभुपद धार।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन प्रभु चरण, चर्चूं मन हरषाय।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुंज धरूँ जिनपद कमल, अक्षय पद हो प्राप्त।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ाऊँ प्रभु निकट, कामबाण हो नाश।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुपद में अर्पण करूँ, मैं नैवेद्य का थाल।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर नाशक प्रभू, की आरति सुखकार।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म क्षय हेतु मैं, धूप जलाऊँ आज।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल हेतु प्रभु-पद अर्पूं फल थाल।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य ''चन्दनामति'' प्रभू-चरण चढ़ाऊँ आज।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल का कलश ले, कर लूँ शांतीधार।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों से पुष्पांजली, करूँ हरष उर धार।
सम्यग्दर्शन रत्न को, नमन करूँ शत बार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-शेर छंद-

उपशम क्षयोपशम तथा क्षयरूप कहा है।
सम्यक्त्व निसर्गज व अधिगमज भी कहा है।।
तत्त्वार्थ का श्रद्धान ही सम्यक्त्व मानिये।
पुष्पांजली करके उसे निज मन में धारिये।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-चौबोल छंद-

औपशमिक सम्यग्दर्शन, कर्मों के उपशम से होता।
वह अन्तर्मुहूर्त तक आत्मा, के सब कर्ममैल धोता।।

इस उपशम सम्यग्दर्शन को, अर्घ्य चढ़ाऊँ रुचि से।
रत्नत्रय को धारण करके, छुट जाऊँ भव दुःख से।।1।।

ॐ ह्रीं उपशमसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शनमोह की सात प्रकृतियों, के क्षयोपशम से होता।
छ्यासठ सागर उत्कृष्टरूप में, आतम के मल को धोता।।
इस वेदक सम्यग्दर्शन गुण को, रुचि से अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण करके, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।2।।

ॐ ह्रीं वेदकसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सात प्रकृतियों के क्षय से, प्रगटे वह क्षायिक कहलाता।
यह सम्यग्दर्शन आत्मा में, होता फिर कभी न छुट पाता।।
इस क्षायिक सम्यग्दर्शन गुण को, रुचि से अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण करके, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय सम्यग्दर्शन सिद्धों में, सदा काल स्थिर रहता।
वायू विरहित जल के समान, कल्लोलरहित निर्मल रहता।।
इस निश्चय सम्यग्दर्शन गुण को, रुचि से अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण करके, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।4।।

ॐ ह्रीं सिद्धगुणनिश्चयसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-कुसुमलता छंद-

शंका नामक दोष एक, सम्यग्दर्शन को मलिन करे।
दृढ़ सम्यक्त्वी हो निशंक, अपने आतम को शुद्ध करे।।
निःशंकित गुणयुत सम्यग्दर्शन को अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।5।।

ॐ ह्रीं निःशंकितअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप संयम दानादिक में, कांक्षा इक दोष कहा जाता।
कांक्षा नहिं करने से वह, सम्यग्दर्शन दृढ़ बन जाता।।
निःकांक्षित गुणयुत सम्यग्दर्शन को अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।6।।

ॐ ह्रीं निःकांक्षितअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनितन मलिन न देख घिनावे, निर्विचिकित्सा गुणधारी।
अपना सम्यग्दर्शन दृढ़कर, वे बनते गुणभंडारी।।
निर्विचिकित्सा युत सम्यग्दर्शन को अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।7।।

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-गुरू अरु लोकमूढ़ता, रहित शुद्ध सम्यक्त्व कहा।
सम्यग्दर्शन का चतुर्थ यह, अंग मुक्ति का पंथ कहा।।
इस अमूढ़दृष्टिगुण युत, सम्यक्त्व को अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।8।।

ॐ ह्रीं अमूढ़दृष्टिअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म-गुरू के दोषों को, आच्छादित कर गुण प्रगटाना।
सम्यग्दृष्टी का गुण है, उपगूहन अंग इसे माना।।
उपगूहन गुण युत सम्यग्दर्शन को अर्घ्य चढ़ाना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।9।।

ॐ ह्रीं उपगूहनअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म से विचलित धर्मात्मा को, धर्म में स्थिर कर देता।
छठा अंग सम्यग्दर्शन का, मोक्षमार्ग में धर देता।।
स्थितिकरण अंग युत सम्यग्दर्शन को ही ध्याना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।10।।

ॐ ह्रीं स्थितिकरणअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और धर्मात्मा के प्रति, वत्सलता का भाव भरे।
सम्यग्दर्शन का यह सप्तम, अंग इसे वात्सल्य कहें।।
इस वात्सल्य अंगयुत सम्यग्दर्शन को ही ध्याना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।11।।

ॐ ह्रीं वात्सल्यअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान-तपो-जिनपूजा से, जिनधर्म प्रभावना होती है।
रत्नत्रय धारण से आत्मा, की प्रभावना होती है।।
इस प्रभावना गुणयुत सम्यग्दर्शन को ही ध्याना है।
रत्नत्रय को धारण कर, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।12।।

ॐ ह्रीं प्रभावनाअंगसम्यक्त्वसमन्वितरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

अष्टांगयुक्त सम्यग्दर्शन, शिवपथ का है सोपान प्रथम।
यह भव्य तथा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय, को होता है शास्त्र कथन।।
इसको व्यवहार बताया है, निश्चय आत्मा में करे रमण।
इस सम्यग्दर्शन की पूजा में, मैं पूर्णार्घ्य करूँ अर्पण।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नमः।

जयमाला

-दोहा-

अठ विध सम्यग्दर्श के, पूजन की जयमाल।
पढ़ पाऊँ सम्यक्त्व मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।

-चौपाई-

जै जै सम्यग्दर्शन जग में, शिवपथ का सोपान है सच में।
रत्नत्रय में प्रथम रत्न है, मिल सकता वह चारों गति में।।1।।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय हो प्राणी, भव्य जीव बन सकते ज्ञानी।
महिमा कहती है जिनवाणी, सम्यग्दर्शन है कल्याणी।।2।।

पच्चिस मल दोषों से विरहित, सम्यग्दर्शन करता है हित।
पलता है जब आठ अंग युत, कहलाता सम्यक्त्व शुद्ध तब।।3।।

जिनवच में शंका नहिं धारे, तब निःशंकित अंग को पाले।
भोगों की कांक्षा जो न करते, वे निःकांक्षित अंग को धरते।।4।।

मुनि तन मलिन न देख घिनावे, निर्विचिकित्सा अंग वो पावे।
जो न मूढ़ता को अपनावे, वह अमूढ़दृष्टी कहलावे।।5।।

स्थितिकरण अंग के पालक, सम्यग्दर्शन के आराधक।
वे वात्सल्य अंग को पाते, धर्म के प्रति कर्तव्य निभाते।।6।।

हो प्रभावना जैन धरम की, जै जै हो प्रभावना अंग की।
ये ही आठों अंग कहाते, सम्यग्दर्शन शुद्ध बनाते।।7।।

ऐसा सम्यग्दर्शन पालो, जिनभक्ती गंगा में नहा लो।
सच्चे देव शास्त्र गुरुवर की, श्रद्धा करते सम्यग्दृष्टी।।8।।

इस सम्यग्दर्शन की पूजा, कर लो इस सम कोई न दूजा।
जयमाला का अर्घ्य चढ़ाओ, तभी ''चंदनामति'' सुख पाओ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-शेर छंद-

जो भव्य रत्नत्रय की पूजा सदा करें।
त्रयरत्न प्राप्ति का प्रयत्न ही सदा करें।।
वे रत्नत्रय धारण के फल को प्राप्त करेंगे।
तब ''चंदनामती'' वे आत्मतत्त्व लहेंगे।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सम्यग्ज्ञान पूजा

–स्थापना –

तर्ज-जपूँ मैं जिनवर जिनवर.....

ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, ज्ञान में ही रम जाऊँ,
ज्ञान का ही फल आतमनिधि को मैं पाऊँ,
हे प्रभु पाऊँ, ज्ञान को पाऊँ।।ज्ञान की ज्योति.।।टेक.।।
सम्यग्ज्ञान की पूजा रचाऊँ, आह्वानन कर उसको ध्याऊँ।
संस्थापन कर मन में बिठाऊँ तुमको, प्रभुवर तुमको, जिनवर तुमको।।
ज्ञान की ज्योति.।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –

नीर गंगा नदी का कलश भर लिया।
तीन धारा प्रभू के चरण कर दिया।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योति जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि सुचन्दन घिसाकर लिया।
भवतपन शांतिहित प्रभु चरण चर्चिया।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योति जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज धोकर लिया थाल में।
प्रभु के सम्मुख समर्पूं झुका भाल मैं।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योति जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण चांदी जुही केतकी पुष्प ले।
मैं समर्पण करूँ प्रभु के सन्मुख भले।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट पकवान्न का थाल भर कर लिया।
ज्ञान की अर्चना में समर्पित किया।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न दीपक जला आरती मैं करूँ।
मोह का नाश कर सौख्य शाश्वत भरूँ।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप सुरभित दहन मैं करूँ।
कर्म की धूप का अब हवन मैं करूँ।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारियल निंबु केला फलों को लिया।
ज्ञान अर्चन में प्रभु पद समर्पण किया।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर चंदन सुअक्षत सहित अर्घ्य ले।
''चन्दनामति'' प्रभू पाद अर्पूं उसे।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व की शांति हित शांतिधारा किया।
ज्ञान की अर्चना में त्रिधारा किया।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।10।।

शांतये शांतिधारा।

आत्म गुण की प्राप्ति हेतु पुष्प अंजली करूँ।
ज्ञानगुण की प्राप्ति हेतु पुष्पवृष्टी करूँ।।
बोध सम्यक् मिले आत्मज्योती जले।
आत्म अज्ञानता का तिमिर तब टले।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-दोहा-

अठ विध सम्यग्ज्ञान की, पूजा करूँ महान।
मण्डल पर पुष्पांजली, करूँ हरूँ अज्ञान।।

इति मण्डलस्योपरि द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वर-व्यंजन का भी जहाँ, यथायोग्य परिमाण।
उस श्रुत का अर्चन करे, शीघ्र कर्म की हान।।1।।

ॐ ह्रीं व्यञ्जनोर्जितश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ समग्र प्रगट करे, जो श्रुत सम्यक् सार।
हीनाधिक भी नहिं रहे, पूजूँ श्रुत भण्डार।।2।।

ॐ ह्रीं अर्थसमग्रश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द अर्थ से पूर्ण जो, श्रुत निर्दोष महान।
उस श्रुत की पूजन करूँ, हो अज्ञान की हान।।3।।

ॐ ह्रीं शब्दार्थोभयपूर्णश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रन्थाध्ययन के काल का, करते जो व्याख्यान।
उन ग्रंथों की अर्चना, देती सौख्य महान।।4।।

ॐ ह्रीं कालाध्ययनवर्णनश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नियमव्रतादि कथन सहित, है उपधान समृद्ध।
विनय देवता आदि युत, ग्रंथ नमूँ गुणसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं उपधानसमृद्धांगश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय आदि से जानिए, विनयोन्मुद्रित अंग।
उस श्रुत पूजन से मिले, आत्मशुद्धि का रंग।।6।।

ॐ ह्रीं विनयोन्मुद्रितांगश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निन्हव जो गुरु आदि का, करें लहें अज्ञान।
इनका जो वर्णन करें, वे हैं शास्त्र महान।।7।।

ॐ ह्रीं गुर्वाद्यनपन्हसमेधितांगश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं के बहुमान से, होती बुद्धि समृद्ध।
उन वर्णन युत शास्त्र की, पूजा दे सुख सिद्धि।।8।।

ॐ ह्रीं बहुमानसमृद्धांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शेर छंद-

हैं तीन सौ छत्तीस भेद मतिज्ञान के।
जो हैं अवग्रहादिरूप भेद नाम से।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्मतिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान है दो भेदरूप शास्त्र में कहा।
उनमें से बारह भेद अंगप्रविष्ट के कहा।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय द्वादशांग में प्रथम आचार अंग है।
श्रावक व मुनि के चरित का वर्णन किया इसमें।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।11।।

ॐ ह्रीं आचारांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय द्वादशांग में द्वितीय सूत्रकृत कहा।
छत्तिस हजार पद से सहित अंगश्रुत रहा।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।12।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय द्वादशांग का तृतीय स्थानांग है।
भव्यों के लिए तत्त्व का वर्णन किया इसमें।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।13।।

ॐ ह्रीं स्थानांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय द्वादशांग में चतुर्थ समवायांग है।
द्रव्यादि के सादृश्य का वर्णन किया इसमें।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।14।।

ॐ ह्रीं समवायांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याख्याप्रज्ञप्ति नाम से पंचम जो अंग है।
है साठ सहस्र प्रश्नों का संकलन इसमें।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।15।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय ज्ञातृकथा अंग छठा अंग कहा है।
गंभीर अर्थयुक्त कथारूप कहा है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय सातवाँ उपासकाध्ययनांग कहा है।
इसमें कही सब श्रावकों की पूर्ण क्रिया है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।17।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय अन्तकृद्दशांग आठवाँ जो अंग है।
प्रत्येक प्रभु के अन्तकृत् केवलि का कथन है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।18।।

ॐ ह्रीं अन्तकृद्दशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमां अनुत्तरोपपादिक दशांग है।
इसमें अनुत्तरों में जन्मे का ही कथन है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।19।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय दशम प्रश्नव्याकरण नामक जो अंग है।
प्रश्नानुसार उसमें कथाओं का कथन है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।20।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशम विपाकसूत्र अंग कहा है।
कर्मों के पाक का कथन इसमें ही कहा है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।21।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दृष्टिवाद अंग पाँच भेदयुत कहा।
परिकर्म नाम उनमें से है प्रथम कहा।।
उनमें से ही परिकर्म पंचभेदयुत जजूँ।
अज्ञान हटाने के लिए अर्घ्य समर्पूं।।22।।

ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव के द्वारा कही है चन्द्रप्रज्ञप्ती।
जिसमें है चन्द्रमा के परिवार की कथनी।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।23।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रज्ञप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव के द्वारा कही है सूर्यप्रज्ञप्ती।
जिसमें है सूर्य देव के परिवार की कथनी।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।24।।

ॐ ह्रीं सूर्यप्रज्ञप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव ने कही है जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ती।
कुलपर्वतादि की कही है जिसमें स्थिती।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण द्वीप-सागरों की भी है पण्णत्ती।
उनके जिनालयों की उसमें जानो स्थिती।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।26।।

ॐ ह्रीं द्वीपसागरप्रज्ञप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याख्याप्रज्ञप्ति नाम का श्रुतज्ञान भी माना।
जीवरु अजीव का कथन उसमें है बखाना।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।27।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूत्र नाम का द्वितीय भेद बताया।
सिद्धान्तसूत्र का कथन है उसी में आया।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।28।।

ॐ ह्रीं सूत्रनाम श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारहवाँ दृष्टिवाद अंग नाम का माना।
प्रथमानुयोग उसका एक भेद बखाना।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।29।।

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शंभु छंद-

श्रुतज्ञान चतुर्दशपूर्वरूप, श्रुत की विशेषता कहता है।
उसमें उत्पादपूर्व पहला, द्रव्योत्पादन को कहता है।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।30।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दुतिय आग्रायणीय पूर्व, जहाँ मोक्ष प्रकाशित होता है।
सब शास्त्रों में भी प्रमुखरूप से, मार्ग प्रदर्शित होता है।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।31।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानुवाद पूरब आत्मा की, शक्ती का वर्णन करता।
यह पूर्वरूप श्रुत आगम की, बातों का नित्य कथन करता।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।32।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, वह चौथा पूर्व कहाता है।
स्याद्वाद का अनुपम लक्षण जो, जिनधर्म का सार बताता है।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।33।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम है ज्ञानप्रवादपूर्व, ज्ञानादि देशना करता है।
है सम्यग्ज्ञान प्रमाणरूप, इसकी सिद्धी वह करता है।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।34।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यादि भेद का वाचक सत्य-प्रवादपूर्व कहलाता है।
इनके शास्त्रों को पढ़ने से, सच-झूठ पता चल जाता है।।

जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।35।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवाद नामक सप्तम, पूरब आत्मा का कथन करे।
भारती सरस्वति माता की, वाणी भव्यात्मा श्रवण करे।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।36।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम है कर्मप्रवादपूर्व, जो कर्मों का वर्णन करता।
कर्मों के नाना भेद तथा, उन सबके अर्थ कथन करता।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।37।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रत्याख्यान पूर्व नवमाँ, सावद्यत्याग का कथन करे।
बस उसी ज्ञान के अर्जन हेतू, मुनिगण इसका पठन करें।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।38।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या-औषधि आदिक का वर्णन, करता है विद्यानुवाद।
मंत्रादिक को पढ़ इसमें प्रायः, पद से च्युत हो जाते साधु।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।39।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारहवाँ है कल्याणवाद, जो तीर्थंकर कल्याणक का।
वर्णन करके बतलाता है, कैसा था तीर्थकाल उनका।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।40।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणानुवाद है पूर्व बारहवाँ, प्राणचिकित्सा बतलाता।
इस वर्णन के ही साथ पूर्व, यह धर्म का फल भी बतलाता।।

जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।41।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरहवाँ क्रियाविशाल पूर्व, श्रुतज्ञान विशाल क्रिया कहता।
वह नृत्य-वाद्य-संगीत-गीतमय, पावन काव्य कथा कहता।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।42।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननायक तीर्थंकर प्रभु ने, चौदहवाँ पूर्व अपूर्व कहा।
है सार्थक नाम त्रिलोकबिन्दु-सारं त्रैलोक्यस्वरूप कहा।।
जल गंधादिक से अर्घ्य बना, श्रुतज्ञान का अर्चन करना है।
श्रुतज्ञान के बल पर नाथ मुझे, कैवल्यज्ञान को वरना है।।43।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसारपूर्वश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं चूलिका के पाँच भेद श्रुतसमुद्र में।
पहली है जलगता जलस्तंभन स्वरूप में।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।44।।

ॐ ह्रीं जलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थलगता द्वितीय चूलिका कही जाती।
मेरू कुलाद्रि पर्वतों का कथन बताती।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।45।।

ॐ ह्रीं स्थलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायागता तृतीय चूलिका का नाम है।
मायावियों के रूप का इसमें व्याख्यान है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।46।।

ॐ ह्रीं मायागताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाशगता चूलिका नामानुसार है।
नभ में गमन की गती आदि कहते शास्त्र हैं।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।47।।

ॐ ह्रीं आकाशगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्रादि कर्म को सिखाती रूपगता है।
इस चूलिका में मनुज-पशु की रूपकथा है।।
इस ज्ञान का अर्चन करूँ सम्यक्स्वरूप है।
इस ज्ञान का वन्दन करूँ जो श्रुत का रूप है।।48।।

ॐ ह्रीं रूपगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

उस सम्यग्ज्ञान के पाँच भेद, मति-श्रुत आदिक माने जाते।
स्वर-व्यंजनयुत आदिक अठ, शुद्धी युत येहैं पाले जाते।।
हम उसी ज्ञान की पूजन का, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
हो ज्ञानज्योति की प्राप्ति 'चन्दना-मती' भाव ये लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नमः।

जयमाला

तर्ज-मिलो न तुम तो हम.....

सम्यग्ज्ञान रतन है दूजा, इसकी करने पूजा,
प्रभू हम आ गये हैं-2।।टेक.।।

ज्ञान के समान जग में, कोई हितकारी वस्तु है नहीं। हो.....
ज्ञान ही प्रमाण सच में, आत्म हितकारी वस्तु है सही।। हो.....
ज्ञानामृत के, स्वाद को चखने, तेरी पूजन करने,
प्रभू हम आ गये हैं-।।1।।

शब्दशुद्धि अर्थशुद्धि और उभयशुद्धि पालन करते जो। हो.....
कालशुद्धिपूर्वक श्रुत के, अध्यन से भवसागर को तरते वो।। हो.....

शुद्धज्ञान का, अर्जन करने, तेरी पूजन करने,
प्रभू हम आ गये हैं।।2।।

उपधानशुद्धी करके, ज्ञान की समृद्धी हम पा सकते हैं। हो....
गुरु की विनय के द्वारा, आत्मा में शुद्धी हम ला सकते हैं।। हो.....
शुद्धातम का, चिन्तन करने, तेरी पूजन करने,
प्रभू हम आ गये हैं।।3।।

आचारशुद्धी द्वारा, शुद्ध आचरण का पाठ पढ़ना है। हो.....
बहुमान शुद्धी द्वारा, शास्त्र का सदा सम्मान करना है।। हो.....
जिनवाणी का, अर्चन करने, तेरी पूजन करने,
प्रभू हम आ गये हैं।।4।।

अष्टभेदयुत शुद्धी के, साथ जैन आगम जो भी पढ़ते हैं। हो.....
''चन्दनामती'' वे सम्यग्ज्ञान के फल मुक्तिश्री को वरते हैं।। हो.....
पूर्ण अर्घ्य को, अर्पण करने, तेरी पूजन करने,
प्रभू हम आ गये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-शेर छंद-

जो भव्य रत्नत्रय की पूजा सदा करें।
त्रयरत्न प्राप्ति का प्रयत्न ही सदा करें।।
वे रत्नत्रयधारण के फल को प्राप्त करेंगे।
तब ''चन्दनामती'' वे आत्मतत्त्व लहेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सम्यक्चारित्र पूजा

–स्थापना (शंभु छंद) –

आत्मा की सब सावद्ययोग से, जब विरक्ति हो जाती है।
वह त्याग की श्रेणी ही सम्यक्चारित्ररूप हो जाती है।।
वह पंच महाव्रत पंचसमिति, त्रयगुप्ति सहित कहलाता है।
तेरह प्रकार का यह चारित, शिवपद को प्राप्त कराता है।।1।।

-दोहा-

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
पूजन हेतू मैं यहाँ, आया हूँ भगवान।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक –

तर्ज-देख तेरे संसार की हालत.....

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
पूजन में जल की महिमा है।
जन्म मृत्यु उससे हरना है।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
चन्दन से चर्चन करना है।
भव आताप शांत करना है।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
पूजन में अक्षत को चढ़ाया।
मिलेगी अक्षय पद की छाया।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
पुष्प माल पूजन में चढ़ाऊँ।
कामबाण विध्वंस कराऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
पूजन में नैवेद्य चढ़ाऊँ।
क्षुधा रोग हर निज सुख पाऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
घृत दीपक का थाल सजाऊँ।
मोहतिमिर को दूर भगाऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
अगर तगर की धूप जलाऊँ।
पूजन कर निज कर्म जलाऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
आम अनार बदाम चढ़ाऊँ।
पूजन करके शिवफल पाऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
अर्घ्य 'चन्दनामती' चढ़ाऊँ।
पद अनर्घ्य पूजन से पाऊँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
जल ले शांतीधार करूँ मैं।
विश्वशांति का भाव करूँ मैं।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।10।।
शांतये शांतिधारा।

सम्यक्चारित के पालन से होता आत्म विकास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।टेक.।।
पूजन में पुष्पांजलि कर लूँ।
गुणपुष्पों को मन में भर लूँ।।
यथाशक्ति चारित पालन से बढ़ता है अभ्यास,
मानो मिलता सूर्य प्रकाश।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-दोहा-

सम्यक्चारित का वलय, है तृतीय विख्यात।
पुष्पांजलि करके यहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज।।1।।

इति मण्डलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-सखी छंद-

नहिं मन से हिंसा करना, दुर्गति जाने से डरना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतहिंसाविरतिरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं हिंसक वचन उचरना, रसना इन्द्रिय वश करना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतहिंसाविरतिरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से भी न हिंसा करना, सर्वदा अहिंसक बनना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतहिंसाविरतिरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं झूठ का चिन्तन करना, व्रत सत्य का पालन करना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतसत्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितमियप्रिय वचन उचरना, व्रत सत्य का पालन करना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतसत्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं तन से प्रेरित करना, व्रत सत्य का पालन करना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतसत्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से न चोरी करना, अस्तेय महाव्रत धरना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतअस्तेयमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोरी के वचन न कहना, अस्तेय का पालन करना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतअस्तेयमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं काय से चोरी करना, अस्तेय महाव्रत धरना।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतअस्तेयमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से न कुशील करूँ मैं, ब्रह्मचारी शीघ्र बनूँ मैं।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतब्रह्मचर्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं वचन कुशील के बोलूँ, सुवचन से शिवपथ खोलूँ।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतब्रह्मचर्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से हो शील का पालन, आत्मा का रहे नित साधन।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतब्रह्मचर्यमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह का भाव भी मन में, नहिं किंचित् हो चिन्तन में।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं मनसाविशुद्ध्याकृत-अपरिग्रहमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह है पाप का कारण, वचनों से भी न हो साधन।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृत-अपरिग्रहमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से विशुद्ध रहना है, परिग्रह को नहिं रखना है।
इस व्रत को अर्घ्य चढ़ाऊँ, सम्यक्चारित पा जाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृत-अपरिग्रहमहाव्रतपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

ईर्यासमिती पाल कर, निज मन करूँ पवित्र।
अर्घ्य चढ़ाऊँ समिति को, हो विशुद्ध मम चित्त।।16।।

ॐ ह्रीं मनसाकृतईर्यासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु वचन से पालते, ईर्यासमिति पवित्र।
अर्घ्य चढ़ाऊँ समिति को, हो विशुद्ध मम चित्त।।17।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतईर्यासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से ईर्यासमिति को, पालें साधु पवित्र।
अर्घ्य चढ़ाऊँ समिति को, हो विशुद्ध मम चित्त।।18।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतईर्यासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से कोमल वचन जो, बोलें भाषा शुद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर समिति को, हों इक दिन वे मुक्त।।19।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतभाषासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाषा समिती वचन से, पालें हों वच शुद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर समिति को, हों इक दिन वे मुक्त।।20।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतभाषासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायशुद्धियुत वचन को, बोलें भाषा शुद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर समिति को, हों इक दिन वे मुक्त।।21।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतभाषासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोषरहित एषणसमिति, मुनि पालें मन शुद्ध।
अर्घ्य चढ़ा इस समिति को, करूँ समिति निज शुद्ध।।22।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतएषणासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से भी जो रखें, मुनि भिक्षा की शुद्धि।
अर्घ्य चढ़ा इस समिति को, करूँ समिति निज शुद्ध।।23।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतएषणासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया से आहार की, रखें सदा जो शुद्धि।
अर्घ्य चढ़ा इस समिति को, करूँ समिति निज शुद्ध।।24।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतएषणासमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेन-देन जो वस्तु का, दयाभाव मनयुक्त।
उस समिती की अर्चना, करती भाव विशुद्ध।।25।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतआदाननिक्षेपणसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयायुक्त वच से करें, रखें उठावें वस्तु।
उस समिती की अर्चना, करती भाव विशुद्ध।।26।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतआदाननिक्षेपणसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयाभावयुत काय से, रखें उठावें वस्तु।
उस समिती की अर्चना, करती भाव विशुद्ध।।27।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतआदाननिक्षेपणसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयायुक्त मन से करें, क्षेपण मल मूत्रादि।
उस समिती युत साधु की, पूजन हरती व्याधि।।28।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतउत्सर्गसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनशुद्धि युत भी करें, क्षेपण मल मूत्रादि।
उस समिती युत साधु की, पूजन हरती व्याधि।।29।।

ॐ ह्रीं वचनविशुद्ध्याकृतउत्सर्गसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायशुद्धि युत जो करें, क्षेपण मल मूत्रादि।
उस समिती युत साधु की, पूजन हरती व्याधि।।30।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतउत्सर्गसमितिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शंभु छंद-

जो धीर-वीर मुनि मनोगुप्ति का, पालन करते जीवन में।
वे स्थिरचित्त आत्मध्यानी, मनमर्कट करते हैं वश में।।
मन को अनुशासित कर मैं भी, यह मनोगुप्ति पाना चाहूँ।
मनगुप्ती को अब अर्घ्य चढ़ा, शुद्धातम में आना चाहूँ।।31।।

ॐ ह्रीं मनोविशुद्ध्याकृतमनोगुप्तिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन महातपस्वी मुनियों के भी, वचनगुप्ति प्रगटित होती।
उनके बिन वचन उचारे ही, वचनों की रिद्धि प्रगट होती।।

रसना इन्द्रिय अनुशासित कर, मैं यह गुप्ती पाना चाहूँ।
वचगुप्ती को अब अर्घ्य चढ़ा, शुद्धातम में आना चाहूँ।।32।।

ॐ ह्रीं वाक्विशुद्ध्याकृतवचनगुप्तिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायोत्सर्ग में स्थित हो जो, कायगुप्ति पालन करते।
आचार्य वीरसागर सम शल्य-चिकित्सा में सुस्थिर रहते।।
निज तन अनुशासित कर मैं भी, यह कायगुप्ति पाना चाहूँ।
इस कायगुप्ति को अर्घ्य चढ़ा, शुद्धातम में आना चाहूँ।।33।।

ॐ ह्रीं कायविशुद्ध्याकृतकायगुप्तिपालनरूपसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

जो पाँच महाव्रत पाँच समिति, त्रयगुप्तिरूप चारित्र कहा।
इनका पालन करने वाले, मुनिराज जगत में पूज्य महा।।
निज में इनको प्रगटित करने, हेतू पूर्णार्घ्य चढ़ाता हूँ।
मन-वचन-काय को स्थिर कर, चारित्र को शीश झुकाता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....

सम्यक्चारित की पूजन से, होगा बेड़ा पार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।टेक.।।

सुनी है हमने देव-शास्त्र-गुरु की महिमा।
पढ़ी है ग्रंथों में इनकी गौरव गरिमा।।
नग्न दिगम्बर मुनियों में, चारित्र दिखे साकार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।1।।

पाँच महाव्रत को मन-वच-तन से पालन करते हैं।
पूर्ण ब्रह्मचारी रहकर जीवनयापन करते हैं। ।

''चारित्तं खलु धम्मो'' का वे, सूत्र करें साकार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।2।।

देख-शोधकर चलना-खाना, आदि समितियाँ पालें।
मुनिसम ही आर्यिका मात, उपचार महाव्रत पालें।।
इन गुरुओं का वन्दन करके, हो भव से उद्धार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।3।।

तीन गुप्तियों का पालन बस, महामुनी करते हैं।
बड़े-बड़े उपसर्गों को वे, सहन तभी करते हैं।।
व्रत-समिती-गुप्ती में ही, चारित्र का है भण्डार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।4।।

यथाशक्ति चारित्र को धारण, हम सबको है करना।
उससे ही 'चन्दनामती', भवसिन्धु से पार उतरना।।
सुर पदवी ले परम्परा से, मिले मुक्ति का द्वार।
पूर्णार्घ्य ले हाथों में, गाते हैं हम जयमाल।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमहाव्रतपंचसमितित्रयगुप्तिरूपत्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो भव्य रत्नत्रय की पूजा सदा करें।
त्रयरत्न प्राप्ति का प्रयत्न ही सदा करें।।
वे रत्नत्रय धारण के फल को प्राप्त करेंगे।
तब 'चन्दनामती' वे आत्मतत्त्व लहेंगे।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

समुच्चय जयमाला

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

करें रत्नत्रय का अर्चन-2,
सम्यक्रतन ये, तीनों जगत में, इसका करें व्रत हम।।करें.।।टेक.।।

सोलहकारण के समापन, में रत्नत्रयव्रत आता।
उपवास या एकाशन कर, व्रत का पालन हो जाता।।
भाद्रपद-चैत्र-माघ में हम,
शुक्ल द्वादशी, से पाँच दिन तक, व्रत का करें पालन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।1।।

तेरस चौदश पूनम को, उपवास किया जाता है।
दो दिन एकाशन करके, व्रत पूर्ण किया जाता है।।
जाप और पूजन करते हैं,
तेरह बरस तक, व्रत पूर्ण करके, होता है उद्यापन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।2।।

वैश्रवण नाम के नृप ने, विधिवत् इस व्रत को किया था।
अहमिन्द्र का पद पा फिर वह, नरभव से मुक्त हुआ था।।
मल्लि तीर्थंकर बन करके,
मिथिलापुरी में, जन्मे पुनः, रत्नत्रय किया पालन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।3।।

ये बालयती तीर्थंकर, शिवपद को प्राप्त हुए हैं।
इन महापुरुष से जग में, रत्नत्रय सार्थ हुए हैं।।
कथा इसकी पढ़कर कितने,
नर-नारियों ने, लेकर रत्नत्रय, का व्रत किया पालन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।4।।

शंकादि दोष अठ एवं, मद आठ मूढ़ता त्रय हैं।
छह अनायतन ये पच्चिस, सम्यक्त्व के दोष कहे हैं।।
दोष करना है निर्मूलन,
जब मोक्षपथ के, सच्चे पथिक बन, चलते रहेंगे हम,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।5।।

संशय-विपरीत व विभ्रम, त्रय दोष ज्ञान के माने।
इनसे विरहित हो सम्यक्-ज्ञानी पदार्थ को जानें।।
यही है सम्यग्ज्ञान रतन,
फिर तप-नियम के, द्वारा करें, सम्यक्चारित पालन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।6।।

रत्नत्रय धारण करने, से सच्चा सुख मिलता है।
'चन्दनामती' नरभव में, ही रत्नत्रय मिलता है।।
तभी नरभव सबसे पावन,
कहलाता है हम, देव-शास्त्र-गुरुओं का करें वन्दन,
करें रत्नत्रय का अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः महाजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-शेर छंद-

जो भव्य रत्नत्रय की पूजा सदा करें।
त्रयरत्न प्राप्ति का प्रयत्न ही सदा करें।।
वे रत्नत्रय धारण के फल को प्राप्त करेंगे।
तब 'चन्दनामती' वे आत्मतत्त्व लहेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

सम्यग्दर्शन ज्ञान अरु, चारित ये त्रयरत्न।
इनका आराधन करूँ, मिले मुक्ति का पंथ।।1।।
काल अनादी से कहा, रत्नत्रय शिवमार्ग।
जिसने भी अपना लिया, वह पहुँचा शिवद्वार।।2।।
इसीलिए यह रत्नत्रय, पूजन का है विधान।
रत्नत्रय की पूर्णता, हेतु किया निर्माण।।3।।
वीर अब्द पच्चीस सौ, अड़तिस का है वर्ष।
भादों शुक्ला पूर्णिमा, पूर्ण किया मन हर्ष।।4।।
सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके शिष्य बने प्रथम, वीरसागराचार्य।।5।।
चारितचूड़ामणि हुए, वे गुरुवर्य महान।
उनकी शिष्या ज्ञानमति, गणिनीप्रमुख प्रधान।।6।।
वीरप्रभू के तीर्थ में, ये हैं पहली मात।
ग्रन्थसृजन में रच दिया, जिनने नव इतिहास।।7।।
इन्हीं ज्ञानमति मात की, शिष्या मैं अज्ञान।
मिला आर्यिका चन्दना-मती गुरू से नाम।।8।।
बचपन से पाया इन्हीं, माँ से धार्मिक ज्ञान।
बहन तथा गुरुमात का, मिला इन्हीं से प्यार।।9।।
इनके आशिर्वाद से, साहित्यिक कुछ कार्य।
मैंने जीवन में किये, पाया ज्ञान का सार।।10।।
इसी शृंखला में बना, यह रत्नत्रय पाठ।
व्रत उद्यापन के लिए, है विधान यह सार्थ।।11।।
रत्नत्रय की साधना, करते जो भी भव्य।
वे इस भव्यविधान को, कर पावें पद नव्य।।12।।
गुरु माँ के करकमल में, अर्पूं दो आशीष।
पूर्ण रत्नत्रय के लिए, झुका रहे मम शीश।।13।।

श्री रत्नत्रय विधान की मंगल आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज-माई रे माई.....

रत्नत्रय मण्डल विधान की, आरति मंगलकारी।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।
बोलो रत्नत्रय की जय, दर्शन-ज्ञान-चरित की जय।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र ये तीन रतन हैं।
इनके धारक परमेष्ठी को, मेरा शत वन्दन है।।
इनके वंदन से हम सब भी.....
इनके वंदन से हम सब भी, बनें मुक्तिपथराही।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।बोलो रत्नत्रय की जय, ...।।1।।
काल अनादी से रत्नत्रय, को शिवपथ माना है।
इनकी पूर्ण प्राप्ति होने पर, शाश्वत सुख पाना है।।
उस शाश्वत सुख की इच्छा ही.....
उस शाश्वत सुख की इच्छा ही, भव दुख नाशनकारी।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।बोलो रत्नत्रय की जय, ...।।2।।
रत्नत्रय व्रत एक वर्ष में, तीन बार आता है।
माघ-भाद्रपद-चैत्र मास में, इसे किया जाता है।।
व्रत पूरा करके उद्यापन.....
व्रत पूरा करके उद्यापन, करते हैं नर-नारी।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।बोलो रत्नत्रय की जय, ...।।3।।
व्रत समाप्त होने पर रत्नत्रय विधान को करिए।
आत्मविशुद्धी हेतु हृदय में, शुभ भावों को भरिए।।
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ती से.....
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ती से, मिले सौख्य भी भारी।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।बोलो रत्नत्रय की जय, ...।।4।।
इस रत्नत्रय के विधान से, जग में मंगल होवे।
करने और कराने वालों, को सुख-सम्पति देवे।।
करें ''सारिका'' पंच परमगुरु.....
करें ''सारिका'' पंच परमगुरु, रक्षा सदा हमारी।
तीन रत्न की आरति करके, बनूँ रत्नत्रयधारी।।बोलो रत्नत्रय की जय, ...।।5।।

श्री रत्नत्रय मण्डल विधान की वंदना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

वंदन करो रे,
श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का, वंदन करो रे।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित ये, रत्नत्रय कहलाते हैं।
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ती से, भविगण इनको पाते हैं।।
वंदन करो, वंदन करो, वंदन करो रे,
रत्नत्रयधारी श्रीगुरुओं का, वंदन करो रे।।1।।

एक वर्ष में तीन बार यह, रत्नत्रयव्रत आता है।
माघ-भाद्रपद-चैत्र मास में, इसे मनाया जाता है।।
वंदन करो, वंदन करो, वंदन करो रे,
महिमाशाली रत्नत्रय व्रत का, वंदन करो रे।।2।।

व्रत पूरा करके इस रत्नत्रय विधान को करना है।
चउ पूजाओं के माध्यम से, प्रभु की भक्ती करना है।।
वंदन करो, वंदन करो, वंदन करो रे,
रत्नत्रय पद की प्राप्ती हेतू, वंदन करो रे।।3।।

सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन, पूजा में बारह अर्घ्य चढ़े।
उसके बाद ज्ञान की पूजन, में अड़तालिस अर्घ्य चढ़े।।
वंदन करो, वंदन करो, वंदन करो रे,
तेंतिस अर्घ्य सहित चारित का, वंदन करो रे।।4।।

इस विधान की रचनाकर्त्री, को मेरा वंदन है।
प्रज्ञाश्रमणी मात चन्दनामति को कोटि नमन है।।
वंदन करो, वंदन करो, वंदन करो रे,
भक्तिभाव से सहित ''सारिका'', वंदन करो रे।।5।।

णमोकार पैंतीसी विधानम्

(संस्कृत)

व्रतोद्यापन

-स्थापन-

मंत्राधिराजं णमोकारमंत्रम्। आह्वानन स्थापनसन्निधापनैः।।
संपूजयामीह विधानपूर्वकं। प्रत्येकवर्णानुगतं हितप्रदं।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञमुखसमुद्भूत-अनादिनिधन श्री अपराजितनाममंत्राधिराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञमुखसमुद्भूत-अनादिनिधन श्री अपराजितनाममंत्राधिराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञमुखसमुद्भूत-अनादिनिधन श्री अपराजितनाममंत्राधिराज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधापनं।

पयोभिः शशांकोज्वलैश्चित्तचोरैः।
कनत्काँचनामत्रनालात्पतद्भिः ।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधागतैर्भ्रामरैर्गंधसारैः ।
सरद्गंधसंदिग्धिताशांतरालैः ।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यशोराशिशंकागतैरक्षतोघैः ।
पयः पूरसंक्षालितैः शालिजातैः।।

गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

लसत्मालतीचंपकुंदप्रसूनैः ।
सुगंधामिलत्षट्पदारावरम्यैः।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोघ्राणसंतर्पकैर्भक्ष्यभेदैः ।
जगज्जंतुक्षुद्रोगविद्राणदक्षैः ।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोध्वांतसंघातसंघातनार्थं ।
विकाशंकरैः शंकरैः सुप्रदीपैः।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगोद्भवैर्धूपधूमैः सुगंधैः।
जगद्घ्राणसंतर्पणार्थं सरद्भिः।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलैर्नालिकेराम्रपूगैः कपित्थैः।
मनोवांछितार्थैः फलैर्दानदक्षैः।।
गुरून् पंच संपूजयामीह भक्त्या।
यथाशक्ति संभावितान् चित्तवृत्या।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मेभ्यः अनंतानंत ज्ञान शक्तिभ्यः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठीभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पानीयचंदनसुशालिभवाक्षतौघैः।
पुष्पैश्चरूत्करसुदीपदशांगधूपैः।।
नानाफलैर्वरतरंविधिना ददेऽहं।
अर्घं च पंचगुरुवे गुरुवे त्रिशुद्ध्या।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः अर्घम्।।9।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येकाक्षरसम्बन्धिनी पूजा

(35 अर्घ्य)

न्यंचंति नीचकर्माणि, णकारोच्चारमात्रतः।
शर्म्माणि समुदयं यांति, ततोऽहं पूजयामि तं।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-प्रथम-णकाराक्षराय अर्घं.....।।1।।

मोऽक्षरं मंत्रराजस्य, यो जनो जिह्वया जपेत्।
मुच्यते मोहमातंगो-पद्रवादिह तत् क्षणं।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-द्वितीय-मोऽक्षराय अर्घं.....।।2।।

अकार-स्वर-संभूत-वर्णनं केन वर्ण्यते।
आदौ हि द्विपंचाशद्वर्णनां पठ्यते तथा।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-तृतीय-अकारस्वराय अर्घं.....।।3।।

रायंति किन्नरा देवाः, सेवया च जगद्गुरोः।
उच्चैः स्वर-विशेषेण, रकारं तमहं यजे।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-चतुर्थरकाराक्षराय अर्घं.....।।4।।

हंति हमक्षयं शीघ्रं, मोह शत्रुमनादिजं।
तमहं प्रयजे तस्मात्स्वकर्महानयेऽनिशं।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-पंचम-हमक्षराय अर्घं.....।।5।।

पूर्वं न प्राणिभिः प्राप्ता, ऋद्धयोऽष्टौ च विष्टये।
ताक्षरेणाशु जायन्ते, तस्मात्ताक्षरमर्च्चयते।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-षष्ठ-ताक्षराय अर्घं.....।।6।।

णमित्यक्षरं लोकेऽहो प्रणामार्थप्रकाशकं।
प्रणामपूर्वकं तस्मात्तमर्च्चेहं जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमस्कार-सम्बन्धि-णमक्षराय अर्घं.....।।7।।

इति सप्ताक्षरैर्युक्ता-नर्हतश्च जलादिभिः।
अष्टभिर्द्रव्यसंदौहै-रर्घमुत्तारयाम्यहं ।।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं अर्हत्-परमेष्ठीभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

□□□

सिद्ध-प्रबंध-सम्बन्धि-णकारोऽत्र प्रपूज्यते।
तस्य प्रसादतो नूनं, नमस्यंति नरामराः।।

ॐ ह्रीं सिद्धनमस्कार-सम्बन्धि-प्रथम-णकाराक्षराय अर्घं.....।।1।।

मोस्वरूपाक्षरदक्षा, लक्ष्यीकृत्यानुवेऽप्यहम्।
ध्यायंतु हृदये स्वस्य, मोक्षमार्गानुगामिनः।।

ॐ ह्रीं सिद्धनमस्कार-सम्बन्धि-द्वितीय-मोऽक्षराय अर्घं.....।।2।।

सिस्वरूपाक्षरं शाश्वत्, पूजा द्रव्येण पावनं।
पूजयामि जगत्पूज्यं, भवस्य हरणे क्षमं।।

ॐ ह्रीं सिद्धनमस्कार-सम्बन्धि-तृतीय-सिकाराक्षराय अर्घं.....।।3।।

धारणं पोषणं चेहाऽमुत्रेद्धाक्षरधारणात्।
तस्मात्कारणात्तमहं, पूजा-द्रव्यैः प्रपूजये।।

ॐ ह्रीं सिद्धनमस्कार-सम्बन्धि-चतुर्थ-द्धाक्षराय अर्घं.....।।4।।

सानुस्वारं णकारं यः, प्रातः प्रातश्च पूजयेत्।
सिद्धाः सिद्धिं प्रयंच्छंतु, तस्मै पूजानुबंधिने।।

ॐ ह्रीं सिद्धनमस्कार-सम्बन्धि-पंचम-प्रांत प्राप्त णकाराक्षराय अर्घं.....।।5।।

इति पंचाक्षरी पूजा, भव्याणां वांछितप्रदा।
तदर्थमष्टभिद्रैव्यैरर्घमुत्तारयाम्यहं ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठीभ्यः पूर्णार्घ्यं....।।

□□□

णाक्षरं तं पुनर्नौमि प्रणमंति सुराः यदा।
आचार्य्यवंदनायां च, पूजयामि जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-प्रथम-णकाराक्षराय अर्घं.....।।1।।

भूयोऽपि मोक्षरं मान्य-मानन्द मन्दिरं मुदा।
जलाद्यष्ट-विधैर्द्रव्यै-र्भक्ति-भारेण भाक्तिकैः।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-द्वितीय-मोऽक्षराय अर्घं.....।।2।।

आकारं निर्विकारं च, साध्वाचारस्य सूचकं।
आचरंति मुदाचार्याः, स्वाचारार्थमहं यजे।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-तृतीय-आकारस्वरायअर्घं.....।।3।।

ईश्वरं स्वरसंघातं, पूजितं प्रार्थितप्रदं।
प्रमोदभरसंभूतं, भक्तिभारेण चार्च्यते।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-चतुर्थ-ईस्वराय अर्घं.....।।4।।

रीत्यक्षरराजस्य, गानं कुर्वंति रागिणः।
आचार्याणां गुण-ग्रामा-नर्चयामि विशेषतः।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-रिकाराक्षराय अर्घं.....।।5।।

याक्षरं पूज्यते नित्यं, परमार्थं प्रकाशकं।
यस्यार्थधारिणोऽप्याशु प्राप्सुःमोक्षं मुनीश्वराः।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-षष्ठयाक्षराय अर्घं.....।।6।।

णमक्षरं यजामीदं, नमिताऽशेषभूतलं।
आचार्य-नमनं तस्मा-दाद्योपांतेन जायते।।

ॐ ह्रीं आचार्यनमस्कार-सम्बन्धि-सप्तम-प्रांत णमक्षराय अर्घं.....।।7।।

इति सप्ताक्षरी पूजा, तृतीया पूरणीकृता।
तदर्थं जलमुख्यैश्च, स्वर्घमुत्तारयाम्यहं।।

ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं आचार्य परमेष्ठीभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।।7।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

□□□

उपाध्यायाधिकारीयो, णंकारः पूज्यते नरैः।
पाठशुद्धिर्भवेद्यस्माद्विधा या व्यसनस्य च।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-प्रथम-णकाराक्षराय अर्घं.....।।1।।

भूयोपि मोऽक्षरं भव्याः, पूजयंतु विशेषतः।
पानीयप्रमुखैर्द्रव्यैः, संसारासातहानये।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-द्वितीय-मोऽक्षराय अर्घं.....।।2।।

वितिवर्णविशेषं यः, पूजाद्रव्येण पूजयेत्।
सुरैः सन्मानतां याति, किं पुनर्नरनायकैः।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-तृतीय-उकाराक्षराय अर्घं.....।।3।।

वेतिवर्णं विधानेन, नरो नारी निरन्तरं।
अर्चयंत्यर्चनाद्रव्यैः, सुरै सौरं प्रपूज्यते।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-चतुर्थ-वकाराक्षराय अर्घं.....।।4।।

ज्झाक्षरनिर्झरद्वारि-धारया गन्ध सारया।
पूजयामि शुभैर्द्रव्यैः, सुगन्धाकृष्टषट्पदैः।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-पंचम-ज्झाक्षराय अर्घं.....।।5।।

यजनं याक्षरस्योच्चै-र्जनाः कुर्वंतु नित्यशः।
न्यायोपात्तेन द्रव्येणा-नीतैर्द्रव्यैर्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-षष्ठ-याक्षराय अर्घं.....।।6।।

नमंति प्रणिधानेन, णमित्यक्षरनामकं।
ये नराः नरके घोरे, न विशंति कदाचन।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायनमस्कार-सम्बन्धि-सप्तम-णमित्यक्षराय अर्घं.....।।7।।

भूयः सप्ताक्षरीं चेमां, पूजां कुर्वन्तु भावतः।
जलाद्यष्टविधैर्द्रव्यै-रर्घमुत्तारयाम्यहं ।।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं उपाध्याय परमेष्ठीभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

□□□

बिना णवर्णं साधूनां, वंदनं नहि जायते।
ततस्तमक्षरं नित्यं, पूज्यते परमादरात्।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-प्रथम-णकाराक्षराय अर्घं.....।।1।।

मोक्षरं यजते यो ना, मुच्यते पापसंचयात्।
संचिनोतिपरं पुण्यं, ततोहं पूजयामितं।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-द्वितीय-मोक्षराय अर्घं.....।।2।।

लुनाति चाघसंघातं, लोवर्णलपितं मुखात्।
यस्तं सलिलधाराभि-र्यजते वर्णमातृका।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-तृतीय-लोवर्णाय अर्घं.....।।3।।

एक्षरं ये धरंत्युच्चैः, कर्णजापं जनाः यदा।
तदा तेषां भवेत् सर्वा, संपच्च सुखसाधिनी।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-चतुर्थ-एऽक्षराय अर्घं.....।।4।।

स-साधुः सेव्यते नित्यं, यस्य ज्ञानगुणांबुधैः।
पारं न प्राप्यते सद्धि-बहुभिश्च विचारकैः।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-पंचम-सकाराक्षराय अर्घं.....।।5।।

सर्वार्थसाधने दक्षं, दक्षा वाक्षरचर्चनं।
कुर्वंतु करुणायुक्ताः, सशक्ताः सर्वकर्मणि।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-षष्ठ-व्वाक्षराय अर्घं.....।।6।।

साक्षरेणांजसा सेव्या, मोक्षलक्ष्मी मनःप्रिया।
यया च रंचितं चेतो, वैचित्यं नोपढौकते।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-सप्तमं-सा-क्षराय अर्घं.....।।7।।

हूस्वरूपाक्षरस्यौच्चैः, पूजनं योमुदाचरेत्।
हा हा हू व्हादिभिर्देव्यैः, पूजां प्राप्नोति नित्यशः।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-अष्टम-हू-स्वरूपाक्षराय अर्घं.....।।8।।

णमहं साधुवर्गस्य, साधुसंवादतां गतां।
पूजयामि महा भक्त्या, पूजाद्रव्यैर्निरंतरं।।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुनमस्कार-सम्बन्धि-नवम ण-मित्यक्षराय अर्घं.....।।9।।

सार्द्ध द्वितीयद्वीपेषु, साधवो ये वसन्ति वै।
तदर्थमष्टभिर्द्रव्यै-रर्घमुत्तारयाम्यहं ।।

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं सर्वसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।।

अपराजित मंत्रस्य, पूजा सन्मंगलप्रदा।
विदुषाक्षयरामेण, कृता ज्ञेया विवेकिभिः।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

अर्हंतः सुरराज पूजित पदाः, सिद्धा लसत्सद्गुणाः।
आचार्याः सुचरित्र साधनपराः, अध्यापका धीश्वराः।।
सिद्धाः साधन साधवोऽत्र भुवने, सद्बुद्धयः साधवः।
पंचैते परमेष्ठिनो निजगुणान्, यच्छंतु चाराधिताः।।1।।

कर्मकलंकनिवारणकारणध्यान कराः। भव्यसमूहसमुद्धरणैकजिनेश्वराः।।
सिद्धवधूवरवांछितलांछित-बोधधराः। जन्मजरामृतिरोगनिवारणसिद्धवराः।।2।।

आचरणे सुविचारपराः शुभध्यानधराः। भूरिभवार्णवतारणकारण- पीतवराः।।
दीक्षितबुद्धिसमुद्रविवर्धन-चन्द्रकराः। पाठकतागुणधारणपाठकनामधराः।।3।।

सौम्यदृगंकुशमारमतंगज- मानभिदं। साधुसमूहमहं प्रयजे गुरुज्ञानविदं।।
पापहरं महामंत्रपरं प्रणमंति नराः। ये निज भक्तिभरेण त्रिसंधिविवेकपराः।।4।।

ते सुरसद्म भजंति निरन्तरसौख्यभरं। देवगणैः परिशोभितमधिविदूरतरं।।
इन्द्रनरेन्द्रफणीन्द्रखगेन्द्रविभूतिप्रदं। जाप्यजपाक फलेण जलेन जलोदरदं।।5।।

भूतगणं ग्रहचौररणं, मणिमंत्रपरं। नाशयतीह च पापघनाघनवातभरं।।
प्राताररं जपनीयपरं परभक्तिभरैः। धर्मपरैः करुणारसपानमहाचतुरैः।।6।।

इत्थं पंचप्रभून् वै वरविधि-सहिता श्रावकाः पूजयन्ति।।
ये ते वाग्भिःस्तुवंति, प्रगुणितपरमाह्लादभाजो भवन्ति।।7।।

तेषां च पंचत्रिंशत् सुगुणितगणनामसंयुतानां निमित्तं।।
वर्णानां सोपवासं विधि मनति नयं संविधत्ते स भव्यः।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञमुखसमुद्भूत-अनादिनिधन श्री अपराजितनाममंत्राधिराजाय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

महामंत्राक्षराणि ये, पूजयन्ति महादरात्।
प्राप्नुवन्ति श्रियं शीघ्रं, ते भव्या स्वात्मसौख्यदाम्।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

व्रत विधि–णमोकार पैंतीसी के उपवास-35, सप्तमी के 7, पंचमी के 5, चतुर्दशी के 14, नवमी के 9, ऐसे उपवास 35 होते हैं।

प्रशस्तिः

वत्सरे युगनवाश्व चन्द्रके। (स 1792) माघवासितचतुर्दशी दिने।। नूतने जयपुरे पुरेशिनि। राजमान जयसिंह राजनि।।9।। वाणी गच्छे गच्छाधीशः शमजातो विद्यानन्दी विद्याधीशं।। समजताः तेषांशिष्यः शिष्य मुख्योऽक्षयराम। पूजामेनाः मुच्चैश्चक्रे-अक्षयरामः। इति श्री नवकार पंच त्रिंशतिकोद्यापन पूजा सम्पूर्णा।।

णमोकार-स्तवन

-आर्यिका चंदनामती

–शिखरिणी छंद–

णमो अरिहंताणं, नमन है अरिहंत प्रभु को।
णमो सिद्धाणं में, नमन कर लूँ सिद्ध प्रभु को।।
णमो आइरियाणं, नमन है आचार्य गुरु को।
णमो उवज्झायाणं, नमन है उपाध्याय गुरु को।।।१।।

णमो लोए सव्व-साहूणं पद बताता।
नमन जग के सब, साधुओं को करूँ जो हैं त्राता।।
परमपद में स्थित, कहें पाँच परमेष्ठि इनको।
नमन इनको करके, लहूँ इक दिन मुक्तिपद को।।२।।

सभी के पापों को, शमन करता मंत्र यह ही।
तभी सब मंगल में, प्रथम माना मंत्र यह ही।।
जपें जो भी इसको, वचन मन कर शुद्ध प्रणति।
लहें वे इच्छित फल, हृदय नत हो 'चन्दनामति'।।३।।